BA-III(H)
(मैथिली प्रतिष्ठा)
पत्र - पंचम

प्रो० रंजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

मैथिली साहित्यक इतिहास
(द्वितीय प्रकरण)

Topic मैथिली लोक साहित्यक तात्पर्य

मैथिली साहित्यमे 'लोक' शब्दक दुइ अर्थमे प्रचलित अछि। लोकक अर्थ होइत छैक जगत आ दोसर अर्थ होइत अछि मानव। सर्वप्रथम वेदव्यास महाकाव्य मे आदि-पर्वमे लोकक जनसामान्य-अर्थ प्रयोग कयलनि। प्राचीन कालमे लोक आ वेद शब्द पर विचार करल गेल एवं तदनुसार दुइ गोट अर्थक प्रमाण भेटल-लोकपरिपाटी आ आर वेद परिपाटी। लोकसाहित्यक सर्वमान्य परिभाषा एखनहुँ धरि नहि करल गेल। कतोक विद्वानक मत अछि जे शास्त्र आ पद्धतिसँ विहीन एवं नगरसँ बाहरक ग्राम साहित्य मात्र लोक-साहित्य थिक। लोकक तात्पर्य होइत अछि नगर आ ग्राममे प्रसरित समस्त जन-समूह। जकर व्यावहारिक ज्ञानक शास्त्र नहि होइत अछि। वस्तुतः भारतीय आधुनिक साहित्यमे लोक-

साहित्यमे लोक-साहित्य अंग्रेजी folk literature क अनुवाद थिक। लोक-संगीत, लोकवार्ता पदक निर्माणकेँ आइ प्रयोग कएल जाइत अछि। डॉ० सत्येन्द्रक अनुसार:- "लोक मानव समाजक ओ वर्ग थिक जे आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता आ पाण्डित्यक अहंकारसँ शून्य रहि एकटा परम्पराक प्रवाहमे जीवित रहैत अछि। लोकसाहित्यमे मानवक आत्मा निवास करैत अछि। एहिमे मुख्यत: जनसाधारणक दु:ख-गरीब, सुख-सौभाग्य, शोषण-उत्पीड़न, श्रद्धा-भक्ति, वाणिज्य-व्यापार आदिक अभिव्यक्ति रहैत अछि। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाक अनुसार - आदिम समाजमे आकर समस्त साहित्य लोक कहबैत अछि।

Sonal